कोरोना प्रकोप से योग की स्वीकार्यता बढ़ी

- ललित गर्ग

मनुष्य के सम्मुख जीवन का संकट खड़ा है। मानसिक संतुलन अस्त-व्यस्त हो रहा है। मानसिक संतुलन का अर्थ है विभिन्न परिस्थितियों में तालमेल स्थापित करना, जिसका सशक्त एवं प्रभावी माध्यम योग ही है। योग एक ऐसी तकनीक है, एक विज्ञान है जो हमारे शरीर, मन, विचार एवं आत्मा को स्वस्थ करती है। यह हमारे तनाव एवं कुंठा को दूर करती है। जब हम योग करते हैं, श्वासों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, प्राणायाम और कसरत करते हैं तो यह सब हमारे शरीर और मन को भीतर से खुश और प्रफुल्लित रहने के लिये प्रेरित करती है। योग कोरोना महाव्याधि से मुक्ति का सशक्त माध्यम है।

भारतीय योग एवं ध्यान के माध्यम से भारत दुनिया में गुरु का दर्जा एवं एक अनूठी पहचान हासिल करने में सफल हो रहा है। इसीलिये समूची दुनिया के लिये अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस स्वीकार्य हुआ है। इसके लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सूझबूझ एवं प्रयासों से अपूर्व वातावरण बना है। आज कोरोना महामारी के कारण जीवन का हर क्षेत्र समस्याओं से घिरा हुआ है। इस साल छठें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का फोकस कोरोना वायरस महामारी के चलतेघर पर रहकर परिवार के साथ योग करने केन्द्रित है। नरेंद्र मोदी ने योग दिवस को लेकर ह्यमाई लाइफ माई योगाह्न इवेंट प्रस्तुत किया है। दरअसल, प्रधानमंत्री द्वारा पिछले महीने आयोजित हुए मन की बात कार्यक्रम में इसके बारे में बताया गया था। इस साल योग दिवस की थीम घर पर योगा और परिवार के साथ योगा है। क्योंकि आज हर व्यक्ति एवं परिवार अपने दैनिक जीवन में अत्यधिक तनाव/दबाव महसूस कर रहा है। हर आदमी संदेह, अंतर्द्वंद्व और मानसिक उथल-पुथल की जिंदगी जी रहा है। मनुष्य के सम्मुख जीवन का संकट खड़ा है। मानसिक संतुलन अस्त-व्यस्त हो रहा है। मानसिक संतुलन का अर्थ है विभिन्न परिस्थितियों में तालमेल स्थापित करना, जिसका सशक्त एवं प्रभावी माध्यम योग ही है। योग एक ऐसी तकनीक है, एक विज्ञान है जो हमारे शरीर, मन, विचार एवं आत्मा को स्वस्थ करती है। यह हमारे तनाव एवं कुंठा को दूर करती है। जब हम योग करते हैं, श्वासों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, प्राणायाम और कसरत करते हैं तो यह सब हमारे शरीर और मन को भीतर से खुश और प्रफुल्लित रहने के लिये प्रेरित करती है। योग कोरोना महाव्याधि से मुक्ति का सशक्त माध्यम है।

योग मनुष्य की चेतना शुद्ध एवं बुद्ध करने की प्रक्रिया है, यह मनुष्य को ऊपर उठाने का उपक्रम है, जीवन में संतुलन स्थापित करने का साधन है एवं परमात्मा एवं परम ब्रह्म से एकाकार होने का विज्ञान है। ब्रह्म का साक्षात्कार ही जीवन का काम्य है, लक्ष्य है। यह साक्षात्कार न तो प्रवचन से ही प्राप्त हो सकता है, न बुद्धि से ही प्राप्त हो सकता है और न बहुत सुनने से ही प्राप्त हो सकता है, उसके लिये जरूरी है स्वयं से स्वयं का साक्षात्कार और यह साक्षात्कार उसी को होता है जिसका अंतःकरण निर्मल और पवित्र है। पवित्र अंतःकरण ही वह दर्पण है जिसमें आत्मा का दर्शन, प्रकृति का प्रदर्शन और ब्रह्म का संदर्शन होता है। शुद्ध अंतःकरण में बुद्धि आकाशवत निर्मल और स्वच्छ रहती है, मन गंगा जैसा पवित्र रहता है, चित्त ऐसा स्थिर रहता है जैसे बिना वायु के अविचल दीपक की ज्योति और सम्पूर्ण चेतना भगवान में मिलने के लिए ऐसी बहती है जैसे समुद्र में मिलने के लिए नदियां। जैसे शीशे में अपना चेहरा तभी दिखलायी पड़ता है जबकि शीशा साफ और स्थिर हो, इसी प्रकार शुद्ध अंतःकरण से ही परम ब्रह्म के दर्शन होते हैं।

जिस योग का महत्व हमारे वेदों या उससे भी पहले के साहित्य में मिलता है आज वही योग दुनियाभर में अपनी प्रसिद्धि पा रहा है एवं कोरोना महासंकट के कारण योग की उपयोगिता पहले की तुलना में अधिक बढ़ गयी है। इसके फायदों को देखते हुए हर कोई अपनी भागती हुई जिंदगी एवं कोरोना के कारण पैदा हुए जीवन संकट में इसे अपनाता हुआ दिख रहा है। धीरे-धीरे ही सही लेकिन लोगों को यह बात समझ में आ रही है कि योग करने से ना केवल कोरोना जैसी बड़ी से बड़ी बीमारियों को दूर भगाया जा सकता है बल्कि अपने जीवन में खुशहाली भी लाई जा सकती है, जीवन को संतुलित किया जा सकता है, कार्य-क्षमताओं को बढ़ाया जा सकता है, शांति एवं अमन को स्थापित किया जा सकता है।

शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक शांति एवं स्वस्थ्यता के लिये योग की एकमात्र रास्ता है। लेकिन भोगवादी युग में योग का इतिहास समय की अनंत गहराइयों में छुप गया है। वैसे कुछ लोग यह भी मानते हैं कि योग विज्ञान वेदों से भी प्राचीन है। हड़प्पा और मोहन जोदड़ों के समय की पुरातत्व विभाग द्वारा की गई खुदाई में अनेक ऐसी मूर्तियां मिली हैं जिसमें शिव और पार्वती को विभिन्न योगासन करते हुए दिखाया गया है। दुनिया में भारतीय योग को परचम फहराने वाले स्वामी विवेकानंद कहते हैं- ह्यह्यनिर्मल हृदय ही सत्य के प्रतिबिम्ब के लिए सर्वोत्तम दर्पण है। इसलिए सारी साधना हृदय को निर्मल करने के लिए ही है। जब वह निर्मल हो जाता है तो सारे सत्य उसी क्षण उसमें प्रतिबिम्बित हो जाते हैं।...पावित्र्य के बिना आध्यात्मिक शक्ति नहीं आ सकती। अपवित्र कल्पना उतनी ही बुरी है, जितना अपवित्र कार्य। आज विश्व में जो आतंकवाद, हिंसा, युद्ध, साम्प्रदायिक विद्वेष की ज्वलंत समस्याएं खड़ी है, उसका कारण भी योग का अभाव ही है।

आज की कोरोना महामारी की जिंदगी मनुष्य को अशांति, असंतुलन, तनाव, थकान तथा चिड़चिड़ाहट की ओर धकेल रही हैं, जिससे अस्त-व्यस्तता बढ़ रही है। ऐसी विषमता एवं विसंगतिपूर्ण जिंदगी को स्वस्थ तथा ऊजार्वान बनाये रखने के लिये योग एक ऐसी रामबाण दवा है जो माइंड को कूल तथा बॉडी को फिट रखता है। योग से जीवन की गति को एक संगीतमय रफ्तार दी जा सकती है। योग हमारी भारतीय संस्कृति की प्राचीनतम पहचान है। योग-चेतना के जागरण से भावशुद्धि होती है। इसकी प्रक्रिया है आत्मा के द्वारा आत्मा को देखना। राग-द्वेष मुक्त चेतना द्वारा स्वयं ही वृत्तियों, प्रवृत्तियों तथा चित्तदशाओं को देखना। सम्यक दर्शन ही ह्यस्वह्य को बदलने का सशक्त उपक्रम है। स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार के प्रयोगों से ग्रंथि-तंत्र के स्राव संतुलित होते हैं। इससे भाव पवित्र रहते हैं, विचार स्वस्थ बनते हैं। इन्हीं से कोरोना जैसी असाध्य महामारी, हिंसा, आतंकवाद, युद्ध एवं तनाव जैसी विश्वव्यापी समस्याओं का समाधान संभव है।

प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है और उसकी तलाश में जीवन भर प्रयास भी करता है। शाश्वत सुख किस में है, इस बात का ज्ञान न होने से वह भौतिक वस्तुओं की ओर दौड़ता है और उनमें सुख ढूंढता है, परन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि बाहरी वस्तुओं में सुख नहीं है। मनुष्य को सुख अपने अंदर ही खोजना चाहिए। इस पार्थिव शरीर में निहित आत्मा में अनंत शक्ति व अनंत ज्ञान है और असली स्वरूप प्राप्त करने पर ही शाश्वत सुख की प्राप्ति हो सकती है और इसके लिये योग को जीवनशैली बनाना होगा। जब मानव अपनी आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक समस्याओं को सुलझाने के लिए अथवा उनका समाधान पाने के लिए योग का आश्रय लेता है तो वह योग से जुड़ता है, संबंध बनाता है, जीवन में उतारने का प्रयास करता है। किन्तु जब उसके बारे में कुछ जानने लगता है, जानकर क्रिया की प्रक्रिया में चरण बढ़ाता है तो वह प्रयोग की सीमा में पहुंच जाता है। इसी प्रयोग की भूमिका को जीवन का अभिन्न अंग बनाकर हम मानवता को एक नयी शक्ल दे सकते हैं। हम भारतीयों के लिये यह गर्व का विषय है कि योग भारत की विश्व को एक महान देन है। योग भारतीयों के जीवन का एक अभिन्न अंग रहा है। लेकिन अब यह संपूर्ण विश्व का विषय एवं मानव मात्र के जीवन का अंग बन रहा है। यह जीव नाना प्रकार के संस्कार रूपी रंगों से रंगे हुए शरीर में रहता है, लेकिन योगाभ्यास द्वारा तपाया गया शरीर रोग, तनाव, बुढ़ापा, क्रोध, असन्तुलन आदि से रहित होकर स्वरूपानुभूति के योग्य होता है। कोरोना प्रकोप के बीच लोगों की खुशहाली, संतुलन, तनावमुक्ति, स्वास्थ्य, विश्वशांति और भले के लिये, पूरे विश्व भर के लोगों के लिये एक पूर्णतावादी दृष्टिकोण उपलब्ध कराने हेतु विश्व योग दिवस की निरन्तरता बनी रहे, यह अपेक्षित है। यह जन-जन की जीवनशैली बने- यही योग दिवस का उद्घोष हो, इसी से लोगों को नयी सोच मिले, नया जीवन-दर्शन मिले।

आईयूसीएन के लिए एक बोल्ड दृष्टि और मूल

(प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ)

https://www.iucncongress2020.org, maud.lelievre@ecomaires.com, https://ecomaires.com/, https://maudlelievre.fr/

- मॉड लेलिएवल

हम सफल होने के लिए जिलों में एक साथ काम करना चाहिए

आईयूसीएन एक संरक्षण संगठन है, मॉड सतत विकास का समर्थन करने के लिए जारी रखने की जरूरत पर जोर दिया. आईयूसीएन सभी लोगों गरिमा और अवसर के साथ, लेकिन हमारे ग्रह की पारिस्थितिकी सीमाओं के भीतर उन्हें प्रदान करता है कि जीवन की गुणवत्ता है, जिसमें एक दुनिया बनाने के लिए प्रयास करना चाहिए. आईयूसीएन के वैज्ञानिक दृष्टिकोण और अपने सदस्यों की विविधता यह इतनी बार प्रगति में बाधा है कि विचारों और राय के ध्रुवीकरण से ऊपर उठकर करने की अनुमति.मॉड प्रतिष्ठा को विकसित करने का प्रयास करेंगे, वैधता, और आईयूसीएन की प्रभावशीलता, राज्यों सहित अपने सदस्यों की विविधता से निकाली गई है जो, सरकारी एजेंसियों, गैर सरकारी संगठनों, और स्वदेशी समूहों, साथ ही अपने छह आयोगों की बेजोड़ विशेषज्ञता. उन्हें विश्वास है कि प्रकृति संरक्षण केवल सामूहिक काम के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है चुनौतियों का सामना हम पता है.

मॉड लेलिएवल (उप-राष्ट्रपति के आईयूसीएन फ्रेंच समिति और जनरल के प्रतिनिधि एसोसिएशन की Les Ecomaires फ्रांस का प्रतिनिधित्व फ्रेंच उम्मीदवारी के पद के लिए आईयूसीएन क्षेत्रीय पार्षद के लिए पश्चिमी यूरोप के समर्थन के साथ फ्रेंच समिति पर आईयूसीएन कांग्रेस 2021) दृष्टि पर आधारित है, एक मूल और ऊजार्वान के लिए प्रतिबद्धता के साथ मिलकर काम कर सभी हितधारकों, विशेष रूप से युवाओं और स्थानीय समुदायों के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर.

जैव विविधता के नुकसान का मुकाबला करने के लिए, जलवायु परिवर्तन, और उभरते रोगों, मॉड पर्यावरण पर आईयूसीएन पहले वैज्ञानिक अधिकार बनाने के लिए प्रतिबद्ध है, वैश्विक प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपने सदस्यों की आवाज और ताकत को मजबूत बनाने के संरक्षण और सतत विकास के लिए वकालत करने के लिए. विज्ञान आधारित नेतृत्व के इस तरह के संरक्षण पर परस्पर विरोधी दृष्टिकोण से ग्रस्त एक तेजी से ध्रुवीकृत दुनिया में आवश्यक हो जाएगा. इसकी मुख्य प्राथमिकताएं आईयूसीएन के वित्त को मजबूत करने और उनके समर्थन के प्रभाव को समझने के लिए दानदाताओं को प्रोत्साहित करने के लिए संघ के लिए आईयूसीएन के 2021-2024 कार्यक्रम के सफल कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए किया जाएगा.

कठिनाइयों पर राजनीतिक समर्थन

संघ को प्रदान करना चाहिए अभिनव और प्रासंगिक विज्ञान आधारित जानकारी, उपकरण और दिशा निदेर्शों के आधार पर स्वीकार किए जाते हैं वैश्विक मानकों को सक्षम है कि अपने सदस्यों के बीच खाई पाटने के लिए विज्ञान और विज्ञान; और सक्षम विकास के कार्यान्वयन और साक्ष्य आधारित नीतियों है कि संबंध में तत्काल आवश्यक प्रकृति के संरक्षण और यह भी सुनिश्चित करना है कि हितों, चुनौतियों, और सभी हितधारकों की जरूरतों को ध्यान में रखा जाता.

आईयूसीएन कार्यक्रम पर

अध्यक्ष का कार्य आईयूसीएन कार्य कार्यक्रम 2021-2024 के कार्यान्वयन की देखरेख और मार्गदर्शन करना और प्रभाव आकलन की संस्कृति को प्रोत्साहित करना और बनाए रखना तथा परिणामों एवं प्रभावों के लिए रणनीतियों को निरंतर अनुकूलित करना है । आईयूसीएन का मुख्य ज्ञान सुरक्षित, संपोषणीय एवं प्रवर्तित होना चाहिए तथा आईयूसीएन एजेंडा पर्यावरण एवं प्रकृति से संबंधित 2030 एसडीजी प्राप्त करने में एक प्रमुख तत्व होना चाहिए ।

वित्त और संसाधनों पर

संघ के वित्त को सुदृढ़ और विविधतापूर्ण बनाया जाना चाहिए, यह ऐसे पैमाने पर है जो अपने मिशन और महत्वाकांक्षा के लिए अनुकूल हो । नई अभिनव और व्यावहारिक समर्थन तंत्र जगह में रखा जाना चाहिए, और दाताओं संघ लाता मूल्य देखना होगा । संघ की स्थिरता के लिए स्पष्ट उपायों को शामिल करना चाहिए

शासन और नेतृत्व पर

संघ के नेतृत्व और शासन ढांचे का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी आईयूसीएन हितधारक कार्यक्रम के कार्यान्वयन में शामिल हों ताकि संघ अपने विजन को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण प्रगति कर सके ।

सदस्यता और सेवा पर

संघ कार्यक्रम के निर्माण और कार्यान्वयन में सदस्यों की भागीदारी में वृद्धि की जानी चाहिए । आईयूसीएन अपने सदस्यों की जरूरतों के लिए उत्तरदायी हो सकता है और संघ में उनकी भागीदारी के लाभ को अधिकतम करने के लिए उन्हें सक्षम है कि वैज्ञानिक सेवाओं और उपकरणों प्रदान करनी चाहिए.

पारिस्थिति की दुनिया में काम आता है

एसोसिएशन लेस इको काम देता है पर्यावरण और सतत विकास के विषयों पर प्रमुख अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेते हैं । हम जलवायु पर पुलिस के दौरान (2010 में विशेष रूप से नागोया सीबीडी जैव विविधता, हैदराबाद 2012 में), विभिन्न जैव विविधता सीबीडी (2010 में विशेष रूप से नागोया सीबीडी जैव विविधता में विशेष रूप से उपस्थित थे (कोपेनहेगन 2009 में पेरिस, 2016 में माराकेच, 2017 में बॉन), लेकिन यह भी 2002 में जोहानसबर्ग में, 2012 में रियो, और सबसे हाल ही में हर 20 साल एसोसिएशन गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से, साइट पर काम करने वाले निर्वाचित अधिकारियों के प्रतिनिधिमंडलों के लिए क्षेत्र धन्यवाद में भी मौजूद है ।

Les Eco Maires

ऐसा लग रहा था पीएम मोदी नही, बल्कि श्रद्धानिष्ठ श्रावक नरेंद्र मोदी के उद्गार हों

गणपत भंसाली, सूरत

चीन द्वारा की जा रही कारस्तानी से निपटने के लिए सेनाएं सक्षम है प्रधानमंत्री जी भी निरन्तर हौसला बढ़ा रहे हैं, हमारे 20-20 सैनिकों की जान चली जाने पर आम आदमी से लेकर प्रधानमंत्री जी का चिंतित होना लाजिमी है, दूसरी और ऑल पार्टी मीटिंग भी इसी दिन होनी निर्धारित थी, विपक्ष के संभवित जुबानी हमले की भी आशंका रहती है, लेकिन इन सभी संकटो से झुंझते हुए प्रधानमंत्री जी जब आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जीवन पर प्रकाश डाल रहे

प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ के जन्म शताब्दी वर्ष निमित जिस कार्यक्रम का 19 जून को सुबह 8 बजे पारस चेनल पर प्रसारण हुआ उसे देश के अधिकांश चेनलो ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के भाषण को बार बार प्रसारित किया, में आचार्य श्री तुलसी के आचार्य काल में प्रिंट मीडिया से जुड़ा हुआ रहा हूँ, प्रिंट व इलोक्ट्रॉनिक्स मीडिया के इतिहास में यह पहला अवसर था कि मीडिया ने न बल्कि प्रधानमंत्री जी के भाषण के हाई लाइट दिखाए अपितु आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जीवन के बारे में बड़ी बड़ी बातें विस्तार पूर्वक बताई, प्रधानमंत्री जी का भाषण जब टी वी चेनलो पर प्रसारित हुआ तो बकायदा टी वी स्क्रीन पर नीचे व ऊपर की और पट्टी पर पी उनके भाषण के हाइलाइट भी पढ़े जा रहे थे, विशेष बिंदु यह भी है कि राष्ट्र की बागडोर संभालने वाले प्रधानमंत्री जी ,राष्ट्रपति जी व लोकसभा अध्यक्ष आदि वरिष्ठ राजनेताओं की अपनी अर्हताएं भी निर्धारित रहती है अतः यहां किसी दार्शनिक की उस कथन के अनुसार ही अपने उद्गार व्यक्त करते है कि किसी जीवित व्यक्ति के बारे में कभी अंतिम राय प्रकट नही करनी चाहिए, लेकिन दूध का जला छाछ को भी फूंक फूंक कर पीता है वाली कहावत के अनुसार वर्तमान के इस विकृति भरे दौर में ये शीर्ष पदों के पर आसीन किसी भी साधु संत व महापुरुष के बारे में भी उनकी खूबियां प्रदर्शित करने में अलबत्ता हिचकिचाते है, लेकिन जिन्होंने भी आज प्रधानमंत्री जी का उद्बोधन सुना तो ये स्पष्ट नजर आ रहा था कि उनके हृदय का रोम रोम व कण कण बोल रहा था, प्रधानमंत्री देश का सर्वेसर्वा होते हैं उनके ऊपर तमाम जिम्मेदारियां रहती है देश जब दुश्मन देश की हरकतों को झेल रहा होता है तो शीर्ष नेतृत्व भी चिंतातुर रहता है, चीन द्वारा की जा रही कारस्तानी से निपटने के लिए सेनाएं सक्षम है प्रधानमंत्री जी भी निरन्तर हौसला बढ़ा रहे हैं, हमारे 20-20 सैनिकों की जान चली जाने पर आम आदमी से लेकर प्रधानमंत्री जी का चिंतित होना लाजिमी है, दूसरी और ऑल पार्टी मीटिंग भी इसी दिन होनी निर्धारित थी, विपक्ष के संभवित जुबानी हमले की भी आशंका रहती है, लेकिन इन सभी संकटो से झुंझते हुए प्रधानमंत्री जी जब आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जीवन पर प्रकाश डाल रहे थे तब उस महापुरुष की ज्ञान रश्मियों से उनके उद्गार भी पावनता व पवित्रता का अहसास करा रहे थे, ऐसा लग रहा था कि जैसे जैसे वे आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी पर अपने उदगार व्यक्त कर रहे है तो वैसे वैसे उन्हें आंतरिक ऊर्जा अर्जित हो रही है, हालांकि उन्होंने ये बताया कि वे आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य से ऊर्जा लेते रहे है, प्रधानमंत्री जी ने आचार्य श्री के सान्निध्य के एक एक लम्हे को रेखांकिन्त किया, एक एक उदाहरण दिया, भले ही महाकवि रामधारी सिंह दिनकर का कथन हो या दिगम्बर आचार्य श्री विद्यानंद जी के उद्गार हो या आचार्य श्री को विवेकानंद की उपमा देने की बात हो, आज ऐसा महसूस हो रहा था कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए प्रधानमंत्रीजी अंतर्मन से बोल रहे थे व वेद बहुत ही प्रभावित नजर आ रहे थे, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का दर्शन उन्हें बहुत भा रहा था, आज तो ऐसा लग रहा था कि मानो वे साक्षात विवेकानंद जी, रामकृष्ण परम हंस के जीवन पर प्रकाश डाल रहे थे, ये सर्व विदित है प्रधानमंत्री जी भले ही राजनीति में है लेकिन वे एक मंजे हुए समीक्षक है, वे प्रबुद्ध व्यक्तित्व के धनी है, वे एक बेहतरीन समीक्षक है, वे कवि व लेखक भी है, तथा उन्हें आध्यात्मिकता व दर्शन की गहरी समझ है, इतने विकट हालातो में प्रधानमंत्री जी ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जीवन दर्शन की समीक्षा करते हुए बारीक से बारीक बिंदुओं पर बड़ा ही सटीकता पूर्वक प्रकाश डाला, प्रधानमंत्री जी कह रहे थे कि यह हम सभी का सौभाग्य है कि संत प्रवर आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी उनकी कृपा व आशीर्वाद को आप और में व हम सभी महसूस करते है,

मोदी जी ने कहा कि आप में से अनेक व्यक्ति ऐसे होंगे कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की ऊर्जा का अवश्य अनुभव किया होगा, उन्होंने कहा कि जब में गुजरात का मुख्यमंत्री का दायित्व सम्भाल रहा था तब मेने उनको कहा था कि तेरापंथ मेरा पंथ बन जाये, तेरापंथ मेरा पंथ बन गया और में भी आचार्य श्री का बन गया, उनको नमन करते हुए श्रद्धांजलि देता हूँ, उन्होंने आचार्य श्री महाश्रमण जी को नमन करता हूँ,धन्यवाद देता हूँ कि इस कोरोनो की महामारी के बीच टेक्नोलॉजी के माध्यम से इतनाअच्छा कार्यक्रम बनाया,मोदी जी ने कहा कि जिन्हें आचार्य प्रवर के सत्संग व साक्षात्कार दोनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ होगा, उस समय उनकी आध्यात्मिक ऊर्जा अवश्य अनुभव किया होगा, मुझे मेरे जीवन मे आचार्य श्री का सान्निध्य निरन्तर मिलता रहा, जब वे गुजरात पधारे तब में गुजरात के मुख्यमंत्री पद का दायित्व सम्भाल रहा था तो उस काल खंड में आचार्य श्री महाप्रज्ञ अहिँसा यात्रा के माध्यम से गुजरात पधारे तब मैंने उनका सान्निध्य प्राप्त किया, प्रधानमंत्री ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का अपना कुछ भी नही था, मानवता की सेवा के अभियान में जुड़ने का सौभाग्य मिला,

प्रधानमंत्री ने आचार्य श्री के जीवन के विशेष बिंदु भी बताए कि में और मेरा छोड़ दें तो सब तुम्हारा है, उन्होंने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी व पूर्व राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम द्वारा सयुंक्त रूप से प्रकाशित पुस्तक फेमेली एंड नेशन को बेहतरीन पुस्तक बताते हुए हर किसी को इस पुस्तक को पढ़ने की सलाह भी दी, कुछ भी हो आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी नही बल्कि एक श्रद्धानिष्ठ श्रावक नरेंद्र मोदी का उद्बोधन था, जिसके प्रसारण से आज टी वी चेनलो की भी टी आर पी में अभिवृद्धि हुई, आज प्रधानमंत्री जी का ये उद्बोधन मात्र 5 लाख तेरापंथी श्रावकों द्वारा ही नही बल्कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रभावी शेली के करोड़ो करोड़ो श्रावकों द्वारा सुना गया, ऊपर से अनूप जलोटा, दलेर मेहंदी, कविता कृष्ण मूर्ति, कैलाश खेर जैसे गायकों ने अंतर्मन से आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जीवन दर्शन पर गजब का संगीतमय प्रकाश डाला व मंजे हुए कवि डॉ कुमार विश्वास का संचालन तो इतना गजब का था कि मानो कोई तेरापंथ धर्म संघ का कोई श्रावक संचालन कर रहा था। नमन पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी को....